व्यापारिक अवसर

लेखक - सच्चिदानंद शुक्ला (मुख्य अर्थशास्त्री, महिंद्रा एंड महिंद्रा)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-III (भारतीय अर्थव्यवस्था) से संबंधित है।

इंडियन एक्सप्रेस

06 मई, 2022

अनिश्चित वैश्विक आर्थिक माहौल निर्यात को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय नीतिगत कार्रवाइयों का आह्वान करता है।

कोरोना महामारी के बावजूद वर्ष 2021 व्यापार के लिए एक रिकॉर्ड साल साबित हुआ था। वॉल्यूम के लिहाज से मर्चेंडाइज ट्रेड 9.8 फीसदी बढ़ा, जबकि डॉलर के लिहाज से यह 26 फीसदी बढ़ा। वाणिज्यिक सेवाओं के व्यापार का मूल्य भी 15 प्रतिशत ऊपर था। वैश्विक रुझानों के अनुरूप भारत का निर्यात अच्छा रहा है, जहाँ 419 अरब डॉलर का रिकॉर्ड वस्तुओं का निर्यात हुआ है, जबकि सेवाओं के निर्यात में 250 अरब डॉलर का इजाफा हुआ है।

हालाँकि, वैश्विक विकास पूर्वानुमानों को अब कम कर दिया गया है। विश्व व्यापार की मात्रा 2022 में 3 प्रतिशत (पहले 4.7 प्रतिशत से नीचे) और 2023 में 3.4 प्रतिशत विश्व व्यापार संगठन के अनुसार बढ़ने की उम्मीद है। ध्यान दें, वैश्विक वित्तीय संकट से पहले के दो दशकों में विश्व व्यापारिक व्यापार की मात्रा बाज़ार विनिमय दरों पर विश्व सकल घरेलू उत्पाद की दर से दोगुनी हो गई। हालाँकि, व्यापार और जीडीपी वृद्धि के बीच यह अनुपात 2022 और 2023 में 1.1:1 तक गिर जाएगा। इस प्रकार, धीमी वैश्विक वृद्धि, एक प्रतिकूल भू-राजनीतिक वातावरण, महामारी की आवर्ती लहरों की छाया और लंबे समय तक आपूर्ति श्रृंखला के मुद्दों का निर्यात पर असर पड़ने की संभावना है।

यह अनिश्चित वैश्विक आर्थिक माहौल सक्रिय नीतिगत कार्रवाइयों की माँग करता है क्योंकि निर्यातक नए अवसरों का लाभ उठाना चाहते हैं। यूक्रेन और श्रीलंका कृषि उत्पादों के प्रमुख निर्यातक हैं और वैश्विक व्यापार में उनकी सीमित उपस्थिति से पैदा हुआ संकट भारत के लिए कृषि निर्यात के अवसर खोलेगा। यह न केवल समग्र निर्यात को बढ़ावा देगा बल्कि उच्च प्राप्तियों के माध्यम से कृषि अर्थव्यवस्था की वसूली का समर्थन करने में भी मदद करेगा। यूरोप के अलावा, अफ्रीका की खाद्य सुरक्षा युद्ध में दोनों देशों से गेहूँ की आपूर्ति पर निर्भर करती है। कम से कम 25 अफ्रीकी देश अपने एक तिहाई से अधिक गेहूँ रूस और यूक्रेन से आयात करते हैं और उनमें से 15 के लिए यह हिस्सा 50 प्रतिशत से अधिक है। श्रीलंका वैश्विक चाय बाज़ार में भी एक प्रमुख खिलाड़ी है और सालाना लगभग 300 मिलियन किलोग्राम का उत्पादन करता है। इसके वार्षिक उत्पादन का लगभग 98 प्रतिशत निर्यात किया जाता है। भारत, 900 मिलियन किलोग्राम के वार्षिक उत्पादन के साथ चाय का दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है और यह इस अवसर का फायदा उठाने और अंतर को पाटने की अच्छी स्थिति में है।

चाय और गेहूँ के अलावा, वस्त्रों के लिए निर्यात के नए अवसर पैदा हुए हैं। श्रीलंका 5.42 अरब डॉलर मूल्य के कपड़ों का निर्यात करता है और इस द्वीप राष्ट्र में लंबे समय तक बिजली कटौती से इसकी उत्पादन और निर्यात क्षमता को नुकसान होगा। जारा और एच एंड एम जैसे प्रमुख वैश्विक ब्रांड कथित तौर पर भारत की ओर देख रहे हैं क्योंकि बांग्लादेश, वियतनाम और कंबोडिया जैसे अन्य एशियाई निर्यातकों में व्याप्त अंतर को कम की क्षमता नहीं है और चीनी कारखाने कोविड की वृद्धि के कारण फिर से बंद हो चुके हैं।

यदि भारत को विकसित बाजारों में निर्यात के अवसरों का दोहन करना है, तो उसे निम्नलिखित कार्य करने होंगे। पहला, कृषि व्यापार के लिए गैर-टैरिफ बाधाओं पर काम करना, जिसमें स्वच्छता और फाइटोसैनिटरी (एसपीएस) आवश्यकताओं के सामंजस्य पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। एसपीएस बाधाओं को विभिन्न तरीकों से संबोधित किया जा सकता है, जिसमें क्षेत्र-विशिष्ट उपायों के कार्यान्वयन के लिए वैज्ञानिक सहयोग और आपूर्ति श्रृंखलाओं में ट्रेसिबिलिटी सिस्टम को मजबूत करना शामिल है। दूसरा, चाय के निर्यात का समर्थन करने के लिए, पारंपरिक चाय बोर्ड इस क्षेत्र में विकास, संवर्धन और अनुसंधान के अनुकूलन के लिए एक बड़ी भूमिका और स्वायत्तता की मांग कर रहे हैं। इसलिए प्रस्तावित चाय संवर्धन एवं विकास अधिनियम का त्वरित क्रियान्वयन अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

तीसरा, भारत को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं के साथ अपने एकीकरण को दोगुना करना चाहिए। वाणिज्य मंत्रालय ने कई व्यापार सौदों पर बातचीत की है। यह एक नई व्यापार समर्थक नीति का वादा करता है, लेकिन भारत को बड़े व्यापार समझौतों और क्षेत्रों का भी हिस्सा बनना चाहिए। चौथा, इंटरमीडिएट इनपुट के लिए टैरिफ दरों को या तो शून्य कर दिया जाना चाहिए या भारत के लिए असेंबली गतिविधियों के लिए एक आकर्षक स्थान बनने के लिए नगण्य होना चाहिए। पाँचवाँ, भारत को एक सक्षम पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण के साथ बने रहना चाहिए ताकि श्रम-गहन प्रक्रियाओं और उत्पाद श्रृंखलाओं के प्रति अपने विशेषज्ञता पैटर्न को पुनः प्राप्त किया जा सके। श्रम बाजार सुधारों को उनके तार्किक निष्कर्ष पर ले जाना चाहिए। छठा, एक सतत और सक्रिय एफडीआई नीति भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि विदेशी पूँजी और प्रौद्योगिकी वैश्विक उत्पादन नेटवर्क में प्रवेश के लिए महत्त्वपूर्ण प्रवर्तक हैं।

अंत में, निर्यात को नुकसान हो सकता है यदि बुनियादी मुद्दे जैसे कि बिजली की उपलब्धता और रसद संबंधी अड़चनों की स्थिति बदतर बनी रहे। आर्थिक सर्वेक्षण 2019 ने सिफारिश की थी कि निम्न स्तर की सेवा लागत (परिवहन, संचार, और गतिविधि आदि के समन्वय में शामिल अन्य कार्य) वैश्विक मूल्य श्रृंखला (Global Value Chains) में उनकी भागीदारी को मजबूत करने के लिए आवश्यक शर्तें हैं। इसकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए।

GS World
Committed to Excellence

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

प्र. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:-

1. भारत के बाद, श्रीलंका वैश्विक चाय उत्पादन में दूसरे स्थान पर है।
2. वर्ष 2021 में भारत के वस्तुओं का निर्यात 419 अरब डॉलर का हुआ है।
3. भारत में चाय का वार्षिक उत्पादन 900 मिलियन किलोग्राम है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?

(क) 1 और 2
(ख) 2 और 3
(ग) 1 और 3
(घ) उपर्युक्त सभी

Expected Question (Prelims Exams)

Q. Consider the following statements-

1. After India, Sri Lanka is in the second place in global tea production.
2. In the year 2021, India's export of goods has been worth $ 419 billion.
3. The annual production of tea in India is 900 million kg.

Which of the above statements are correct?

(a) 1 and 2
(b) 2 and 3
(c) 1 and 3
(d) All of the above

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्र. भारत को विकसित बाज़ारों में निर्यात के अवसरों का दोहन करने के लिए क्या कदम उठाए जाने चाहिए? सोदाहरण चर्चा कीजिए। (250 शब्द)

Q. What steps should be taken by India to tap the export opportunities in the developed markets? Discuss for example. (250 Words)

Committed To Excellence

नोट :- अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रख कर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्त्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।